एस्तेर

1 क्षयर्ष राजा भारतवर्ष से इथियोपिया
तक एक सौ सत्ताईस प्रान्तों पर शासक
रहा। उसके समय की यह घटना है। 2 एक
दिन जब वह अपनी राजधानी शूशन में था।
3 तो अपने तीसरे साल में सभी अधिकारियों
की दावत की। फ़ारस और मादै देशों के
सेनापति और सभी प्रान्तों के प्रधान भी वहाँ
थे। 4 वह एक सौ अस्सी दिनों तक अपना
ठाठ-बाठ और दौलत को दिखाता रहा।
5 इसके बाद सात दिन सभी छोटे-बड़ों को
शूशन में दावत दी। 6 वहाँ महीन मलमल
के सफ़ेद और नीले पर्दे थे। वे सन की
बैजनी डोरियों के सहारे चाँदी के छल्लों और
संगमरमर के खम्भों से बन्धे थे। लाल,
सफ़ेद, पीले और काले संगमरमर पच्चीकारी
की बनी हुई फ़र्श पर सोने-चाँदी की कुर्सियाँ
थी। 7 राजा बहुत बड़े दिल का था। इसलिए
उसने सोने के बर्तनों में लोगों को जमकर
दाखमधु पिलाया। 8 लोग अपनी इच्छा ही से
पिया करते थे। किसी पर ज़ोर -जबरदस्ती
नहीं की जाती थी। 9 रानी वशती ने भी
महल में महिलाओं की दावत की। 10 राजा
सातवें दिन नशे में धुत्त था, उसने महमान,
विजता, हर्बोना, बिगता, अबगता, जेतेर और
कर्कस नाम के खोजों को आदेश दिया,
11 कि रानी वशती को राजमुकुट पहना
कर उसके पास लाया जाए, ताकि लोग
उसकी खूबसूरती देख सकें। 12 लेकिन जब
रानी ने आदेश पालन करने से इन्कार कर
दिया, राजा को गुस्सा आया। 13 तब राजा
ने ज्योतिषियों से पूछा,"नियम और रिवाज़
के अनुसार क्या किया जाना चाहिये?"
14 उसके पास कर्शना, शेतार, अदमाता,
तर्शीश, मेरेस, मर्सना,ममूकान नामक फारस
और मादै के सात बड़े अधिकारी थे। ये
लोग बेखटके राजा के सामने आ -जा सकते
थे। पूरे साम्राज्य में उनकी पहली जगह
थी। 15 राजा ने यह जानना चाहा कि रानी
के साथ कैसा बर्ताव किया जाए। 16 तब
ममूकान ने वहाँ मौजूद लोगों के सामने कहा,
- रानी ने केवल राजा ही की नहीं सभी
सम्मानित अधिकारियों और प्रान्तों के सभी
लोगों की बेईज़्ज़ती की है। 17 यह बात जब
महिलाओं को मालूम होगी, वे भी अपने
-अपने पति की बात नहीं मानेंगी। 18 फ़ारसी
और मादी अधिकारियों की पत्नियाँ भी पति
के विरोध में बलवा करेंगी। यह तो बड़ी
बुरी बात होगी। 19 यदि राजा को मेरी सलाह
पसन्द हो तो एक आदेश दिया जाए, जो
फारसियों-मादियों के लिए कानून बन जाए।
साथ ही रानी वशती को राजा के सामने आने
की इज़ाज़त न मिले। उसकी जगह किसी
और को मौका दिया जाए। 20 इस आदेश
के बाद सभी महिलाएँ अपने-अपने पति का
आदर करेंगी। 21 ममूकान की यह बात सभी
को ठीक लगी। 22 सभी की भाषा में पत्र भेजे
गए, कि पति धर का मुखिया हो।

2 इन बातों के बाद जब राजा का गुस्सा
शान्त हुआ, तब उसने वशती को और
उसकी अनाज्ञाकारिता के खिलाफ़ निकाली
राजा की आज्ञा को याद किया। 2 तब राजा
की सेवा करने वाले ने कहा, "राजा के लिए
खूबसूरत कुंवारी कन्याएँ ढूँढ़नी चाहिए।
3 और राजा सभी प्रान्तों में, ऐसे लोगों को
ठहराए जो खूबसूरत कुंवारी कन्याओं को
राजधानी शूशन के रनिवास में इकट्ठा करके

महिलाओं के प्रबन्धक हेगे के सुपुर्द कर दे। साथ ही उन्हें श्रृंगार आदि का सामान भी दिया जाए। 4 जो लड़की राजा को अच्छी लगे, वह वशती की जगह पटरानी बनाई जाए। इस बात से राजा भी राज़ी हो गया।
5 शूशन में मोर्दकै नाम का एक यहूदी था। वह बिन्यामीनी कीश का परपोता, शिमी का पोता और याईर का बेटा था। 6 वह नबूकदनेस्सर द्वारा लोगों को जब यरूशलेम से बन्दी बनाकर लाया गया था, यह भी उन में शामिल था। 7 उसने अपनी चचेरी बहन हदस्सा अर्थात एस्तेर का पालन पोषण किया था, क्योंकि वह अनाथ थी। वह बहुत खूबसूरत थी। मोर्दकै ही उसका सब कुछ था। 8 जब राजा का आदेश सब को मिला और कन्याएँ राजधानी में पहुँचाई गई, तब वह भी उनमें से एक थी। 9 वह लड़की राजा को पसन्द आ गई। तुरन्त उसने श्रृंगार की चीज़ें, खाना और सात सहेलियाँ दीं। उसे सबसे अच्छी जगह रखा गया। 10 एस्तेर ने अपनी जाति और कुल के बारे में किसी को नहीं बताया। 11 हर दिन मोर्दकै रनिवास के बाहर आंगन में टहला करता था ताकि उसका हाल-चाल जान सके। 12 एक नियम (तरीके) के अनुसार क्षयर्ष राजा के पास जाने के लिए एक कुंवारी की बारी बारह महीने के बाद आया करती थी। इसी समय वे अपने रूप निखार के लिए मेहनत किया करती थीं। छः महीने तक गंधरस का तेल, छः महिने खुशबूदार पदार्थ और दूसरी चीजों का उपयोग 13 रनिवास से वे जो कुछ राजमहल ले जाना मांगती थी, उन्हें मिला करता था।
14 शाम को वह अन्दर जाती थी और दूसरे दिन सुबह लौट कर दूसरे रनिवास में राजा के खोजे और रखैलों के प्रबन्धक शाशगज की देखरेख में रखी जाती थीं। और फिर राजा के पास नहीं जाती थीं। यदि राजा किसी से खुश हो जाया करता था, तो उसे वह फिर बुलाता था। 15 जब एस्तेर की बारी आई तब वह उसकी बहुत मांग नहीं थी। जितने लोगों की नज़र उस पर गई, वे सभी खुश थे। 16 एस्तेर राजा के पास महल में उसके शासन के सातवें साल के दसवे अर्थात तेबेत के महीने में पहुँचा गई। 17 दूसरी सभी कन्याओं से ज़्यादा राजा ने उस से प्रेम किया। वही राजा की कृपा का पात्र बन गई। इसलिए उसके सिर पर ताज रखा गया और वशती की जगह पटरानी बनाया गया। 18 एस्तेर को आदर देने के लिए सभी ऊँचे अधिकारियों को दावत दी। सभी प्रान्तों में छुट्टी का एलान किया गया और ईनाम बाँटे गए। 19 जिस समय कुवांरियों को दूसरी बार इकट्ठा किया गया, मोर्दकै राजभवन के फाटक पर बैठा था। 20 एस्तेर ने मोर्दकै की सलाह के मुताबिक अपनी जाति और कुल के बारे में किसी को न बताया।
21 बिकतान और तेरेश नाम के दो राजा के द्वारपाल थे। वे राजा से नाराज होकर मोर्दकै को नुकसान पहुँचाना माँगते थे। 22 मोर्दकै को यह मालूम होते ही उसने एस्तेर को खबर दे दी। बाद में एस्तेर ने राजा को यह संदेश पहुँचा दिया। 23 जाँच होने के बाद उन दोनों आदमियों को फाँसी की सज़ा मिल गयी।

3 कुछ समय बाद हम्मदाता के बेटे हामान को राजा ने ऊँचा पद दिया। दूसरे हाकिमों की तुलना में उसे ऊँचा पद दिया गया। 2 राजा के सभी कर्मचारी हामान को बहुत इज़्ज़त दिया करते थे, क्योंकि यह राजा का आदेश था। लेकिन मोर्दकै हामान के सामने नहीं झुकता था। 3 तब राजभवन के फाटक के अन्दर के कर्मचारियों ने मोर्दकै से पूछा, “तुम राजा की बात क्यों नहीं मानते हो?” 4 वे उससे लगातार पूछते रहे और

उसने उनकी बात पर ध्यान न दिया तो
हामान को बता दिया। वे लोग यह देखना
चाहत थे कि मोर्दकै की बात मानी जाएगी
या नहीं। इसलिए कि मोर्दकै उनको बता
चुका था कि वह यहूदी है। 5 यह देख कि
मोर्दकै उस को आदर सम्मान नहीं दे रहा
है , उसे बहुत गुस्सा आया। 6 केवल मोर्दकै
को नुकसान पहुँचाना उसने बहुत सस्ती बात
समझा। इसलिए कि हामान को मालूम पड़
चुका था कि मोर्दकै की जाति क्या है।
इसलिए हामान ने क्षयर्ष के साम्राज्य में रहने
वाले सभी यहूदियों को भी मोर्दकै की जाति
समझकर बर्बाद करने की ठानी थी। 7 राजा
क्षयर्ष के बारहवें साल के नीसान महीने में
हामान ने अदार नामक बारहवें महीने तक
के एक -एक दिन और एक-एक महीने के
लिए पूर अर्थात अपने सामने चिट्ठी डलवाई।
8 तब हामान राजा से बोला,“आपके राज्य
के सभी प्रान्तों में रहने वाले देश -देश के
लोगों के बीच में तित्तर-बितर हुए लोग हैं।
उनके नियम अलग हैं। वे राजा के आदेश
को नहीं मानते हैं। इसलिए उनका हमारे साथ
रहना खतरनाक है। 9 यदि आप मेरी बात
मान लें, तो उन्हें खतम करने का आदेश
दिया जाए। मैं राजा के भण्डारियों के हाथ
में राजभण्डार में पहुँचाने के लिए, दस हजार
किक्कार चाँदी दूँगा। 10 तब राजा ने अपनी
अँगूठी अपने हाथ से उतारी और हामान को
दी। 11 राजा ने हामान से कहा,“तुम्हें चाँदी
और लोग मुहैया करे जाएँगे, तुम जैसा चाहो
करो। 12 उसी पहले महीने के तेरहवें दिन को
राजा के लेखक बुलाए गए। हामान के आदेश
के अनुसार राजा के सभी अधिकारियों, सब
प्रान्तों के प्रधान और देश-देश के लोगों के
गवर्नरो के लिए चिट्ठियाँ, एक-एक प्रान्त की
लिपि में और हर एक देश की जुबान में राजा
क्षयर्ष के नामा से लिखी गई। उनमें राजा की
अंगूठी की मोहर भी कर दी गई। 13 राज्य के
सभी प्रान्तों में इस मनसा से चिट्ठियाँ भेजी
गईं, कि एक ही दिन में अदार महीने के
तेरहवें दिन को जवान, बूढ़े, महिलाएँ, बच्चे
सभी मारे जाएँ और उनकी दौलत लूट ली
जाए। 14 आदेश की नकल सभी जगह भेजी
गई, ताकि सभी लोग तैयार रहें। 15 शूशन में
यह आज्ञा दी गई थी ,जिसे पहुँचाने के लिये
डाकिये तुरन्त निकल पड़े थे। राजा और
हामान उस समय दाखमधु पीने बैठे ही थे,
कि शूशन में घबराहट फैल गयी।

4 मोर्दकै को यह सभी मालूम हो गया,
तब उसने अपने कपड़े फाड़े, टाट पहना
और राख डाल कर नगर के बीच जाकर
ऊँची और दुखभरी आवाज़ में चिल्लाने लगा।
2 टाट पहने व्यक्ति को राजमहल में आने की
इज़ाज़त न होने के कारण वह फाटक पर
ही चिल्लाता रहा। 3 एक-एक प्रान्त में जहाँ
जहाँ राजा का आदेश और कानून पहुँचा,
वहाँ के यहूदी टाट पहने, राख डाले विलाप
करते रहे। 4 एस्तेर की सहेलियों और खोजों
ने जाकर रानी को बताया जिससे उसे बहुत
दुख हुआ। उसने मोर्दकै को सलाह दी कि
वह टाट उतारे और वे कपड़े पहने जो वह
भेज रही है। 5 तब राजा ने हताक को यह
पूछने के लिए मोर्दकै पास भेजा कि वह इन
सभी बातों को कारण जान ले। 6 हताक वहाँ
गया भी। 7 मोर्दकै ने सब कुछ उसे बतला
दिया। 8 यहूदियों के विनाश के आदेश की
नकल भी उसने हताक के हाथ एस्तेर को
पहुँचाती, ताकि वह राजा के सामने बिनती
करे। 9 हताक ने ऐसा किया भी। 10 एस्तेर ने
हताक से मोर्दकै के लिए यह संदेश पहुँचाया,
11 “सभी लोगो को मालूम है कि राजा के
बिना आज्ञा दिए कोई राजा के पास पहुँच

नहीं सकता। तीस दिन से राजा ने मुझे बुलाया
नहीं है। 12 यह सब मोर्दकै को बताया गया।
13 तब मोर्दकै ने कहा,"तुम यह मत सोचना
कि राजमहल में रहने के कारण तुम और
तुम्हारी सहेलियाँ बच जाएँगी। 14 यदि इस
समय तुम खामोश रहोगी, तो परमेश्वर तो
किसी तरह से यहूदियों को बचाएँगे ही,
लेकिन तुम परिवार सहित मारी जाओगी।
क्या पता, यहूदियों को बचाने के लिए ही
तुम्हें रानी बनने का मौका दिया गया है?
15 तब एस्तेर ने उत्तर दिया, 16 "शूशन के
यहूदियों को इकट्ठा करो और मेरे लिए
उपवास करो। मैं भी अपनी सहेलियों के
साथ उपवास करूँगी। तभी मैं राजा के पास
जाऊँगी, यदि मैं मार भी डाली जाऊँगी, तो
कोई बात नहीं।" 17 तब मोर्दकै चला गया
और एस्तेर के कहने के मुताबिक किया।

5 तीसरे दिन राजसी पहनावा पहनकर
एस्तेर राजा के पास खड़ी हो गई। उस
समय राजा गद्दी पर बैठा हुआ था। 2 एस्तेर
को देख, वह खुश हुआ और उसकी ओर
राजदण्ड बढ़ाया। एस्तेर ने उसकी नोक छू
ली। 3 तब राजा ने उससे सवाल किया, "हे
एस्तेर रानी, तुम्हें क्या चाहिए? आधा राज्य
तक मैं दे सकता हूँ। 4 एस्तेर बोली, "मैंने
राजा के लिए दावत की है। यदि आपको
मंज़ूर हो, तो हामान को भी साथ लाईए।
5 राजा ने तुरन्त हुक्म दिया, कि हामान
को लाया जाए, ताकि एस्तेर का निमंत्रण
स्वीकार किया जाए। 6 दावत के समय जब
लोग दाखमधु पी रहे थे, तब राजा ने एस्तेर
से कहा, "तुम चाहती क्या हो, मैं तुम्हें आधा
राज्य तक दे सकता हूँ।" 7 एस्तेर बोली,"मेरी
माँग यह है, 8 कि यदि राजा मुझ से खुश है,
तो राजा ओर हामान उस दावत में आएँ, जो मैं
उनके लिए कल करने वाली हूँ। 9 उस दिन
बड़ी खुशी से हामान बाहर आया। लेकिन
जब उसने मोर्दकै को फाटक में देखा, तो
उसको उसने आदर न दिया न ही वहाँ से
हटा, तो उसे बहुत गुस्सा आया। 10 वह
वहाँ से घर आया और अपनी पत्नी तथा
दोस्तों को बुलवाया। 11 तब हामान ने राजा
से मिली तरक्की और दौलत, इज़्जत, बाल
बच्चों की संख्या आदि के बारे में बखान
किया। 12 हामान ने यह भी कहा राजा के
साथ दावत में एस्तेर ने मुझे नेवता दिया।
कल भी मुझे ही राजा के साथ खाने पर
बुलाया है। 13 लेकिन मैं जब भी मोर्दकै को
राजभवन के फाटक पर देखता हूँ, तो सब
कुछ बेकार लगता है। 14 उसकी पत्नी और
दोस्तों ने कहा, "पचास हाथ ऊँचा फाँसी
का खम्भा बनवाओ। राजा से सुबह कहना
कि मोर्दकै को उस पर लटका दिया जाए।
इसके बाद ही दावत में जाना।" यह बात
उसे अच्छी लगी और उसने एक खम्भा भी
बनवाया।

6 उस रात राजा सो न सका। उसके आदेश
पर इतिहास की किताब लायी गई और
उसे पढ़ा गया। 2 उसमें यह लिखा था कि एक
बार राजा क्षयर्ष के द्वारपाल बिगताना और
तेरेश ने उसे नुकसान पहुँचाना चाहा था, तब
मोर्दकै ने यह भेद खोल दिया था। 3 तब राजा
ने पूछा,"क्या इस काम के लिए मोर्दकै को,
सराहा गया था? सेवकों ने कहा,"नहीं कुछ
भी नहीं।" 4 राजा ने जानना चाहा कि आँगन
में उस वक्त कौन है। उसी समय हामान राजा
के निवास से बाहरी आंगन में इसलिए आया
था कि राजा से मोर्दकै को फाँसी देने के लिए
कहे। 5 तब राजा के कर्मचारी बोले "हामान
तो आँगन में खड़ा हो।" राजा ने उसे अन्दर
लाने का आदेश दिया। 6 हामान के अन्दर
आने पर राजा ने पूछा,"जिस इन्सान को

इज़्ज़त मिलनी चाहिए उसके लिए क्या होना
चाहिए ?"हामान ने सोचा कि राजा उसी को
सम्मान देना चाहता है। 7 वह बोला, "जिस
व्यक्ति की राजा ऊँचा उठाना चाहता है।
8 उसके लिए शाही कपड़े, जो राजा के हैं,
और राजा का घोड़ा हो। उसके सिर पर रखने
के लिए राजा का मुकुट हो। 9 तब ये सब
चीजें एक हाकिम को सौंपी जाएँ। राजा के
कपड़े पहने, राजा का मुकुट सिर पर रख वह
राजा के घोड़े पर बैठ जाए। फिर उसे नगर के
चौक-चौक घुमाया जाए। उसके आगे-आगे
यह एलान भी किया जाए कि जिसकी प्रतिष्ठा
राजा करना चाहे, उसके साथ ऐसा ही किया
जाए। 10 राजा ने हामान से कहा, "जल्दी से
शाही कपड़े, घोड़ा आदि ले जाकर मोर्दकै
को सम्मानित करो।" 11 हामान ने वैसा किया
भी। वह यह भी पुकारता गया, कि जिस
आदमी को राजा इज़्ज़त देना चाहेगा, उसके
साथ ऐसा ही किया जाएगा। 12 तब मोर्दकै
राज महल के फाटक में वापस गया। लेकिन
दुखी हामान अपना सिर ढाँप कर अपने
घर आ गया। 13 हामान ने अपनी पत्नी और
दोस्तों को सब कुछ बतला दिया। वे लोग
बोले, "तुम जिस की बेइज़्ज़ती करना माँगते
थे, यदि वह यहूदियों में से है, तो तुम्हारी ही
बेइज़्ज़ती होगी।" 14 वे सब बातों ही में लगे
थे, तभी राजा के कर्मचारी आए और हामान
को एस्तेर की दी गई दावत में ले गए।

7 इसलिए राजा और हामान एस्तेर रानी
के भोज में आए। 2 दूसरे दिन जब राजा
दाखमधु पी रहा था, उसने एस्तेर से फिर
पूछा,"तुम क्या चाहती हो ? मैं तुम्हें आधा
राज्य तक दे सकता हूँ। 3 रानी एस्तेर बोली,
"यदि आप देना ही चाहते हैं, तो मेरे लोगों
की जान बचाईए। 4 मैं और मेरे लोग बेचे
जा चुके हैं। हमें बर्बाद कर दिया जाएगा।
यदि हमें गुलाम बनाने के लिए बेचा जाता,
तो मैं खामोश रहती।" 5 तब राजा ने रानी से
सवाल किया, "वह कौन आदमी है जिसने
यह योजना बनाई है?" 6 एस्तेर ने तुरन्त
कहा,"यह हामान ही है।" तभी हामान को
डर भी लग गया। 7 राजा गुस्से से उठा और
बगीचे में चला गया। यह समझ कर कि
राजा मुझे नुकसान पहुँचाएगा, वह एस्तेर
रानी से उसकी जान बचाने के लिए खड़ा
हो गया। 8 जब राजा वापस आया तो देखा
कि हामान एस्तेर के सामने झुक रहा है।
राजा बोला,"क्या हामान एस्तेर की हानि
करना चाहता है?" राजा के यह कहते ही
कर्मचारियों ने हामान का मुँह ढाँक दिया।
9 तब राजा के सामने रहने वाले खोजों में से
हर्वोना नामक एक ने कहा, "राजा जी, हामान
के पचास हाथ ऊँचा फाँसी का खम्भा है, जो
उसने मोर्दकै के लिए बनवाया है। जब कि
वह राजा भलाई की बात कह चुका है।"
10 तब राजा ने उसी खम्भे पर हामान को
लटकवा दिया।

8 उसी दिन राजा ने हामान की धन
दौलत, एस्तेर रानी को दे दी। राजा के
सामने मोर्दकै आया और एस्तेर के साथ की
रिश्तेदारी बताई। 2 तब राजा ने उस अंगूठी
को जो हामान से ली थी, मोर्दकै को दे दी।
हामान के घरबार का अधिकार भी मोर्दकै
को दे दिया। 3 फिर से एस्तेर राजा के पैर
पर गिरी, आँसू बहाए और दोहाई दी कि
यहूदियों के मारे जाने की योजना को समाप्त
किया जाए। 4 तब राजा ने सोने का राजदण्ड
एस्तेर की ओर बढ़ाया। 5 तभी एस्तेर खड़ी
हो गयी, और कहा, "यदि राजा मंजूरी दें
और वह मुझसे खुश हैं। यदि मैं उन्हें अच्छी
लगती हूँ और मेरी बात उन्हें पसन्द आए, तो
जो चिट्ठियाँ हामान ने राजा के सभी प्रान्त में

यहूदियों को बर्बाद करने के लिए लिखाई
थीं, उनको बदल दिया जाए। 6 आखिर मैं
अपनी बिरादरी के लोगों के ऊपर आने वाली
मुसीबत को कैसे देख पाऊँगी। अपने भाईयों
को मरते मैं देख नहीं सकती। 7 तब राजा
ने रानी और मोर्दकै से कहा,"मैने हामान
का घर -बार एस्तेर को दे दिया है। हामान
को फाँसी दे दी गई है। इसलिए कि उसने
यहूदियों को नाश करने की योजना बनाई
थी। 8 इसलिए तुम जैसा ठीक समझो राजा
के नाम से यहूदियों का लिखो। उसके ऊपर
राजा की अंगूठी की मोहर भी लगवा देना।
तब इस आदेश को कोई रद्द न कर पाएगा।
9 सीवान नाम तीसरे महीने के तेईसवें दिन
राजा के क्लर्क (बाबू) बुलाए गए। और
जिस बात का आदेश मोर्दकै ने उन्हें दिया,
उसे भारतवर्ष से कूश तक एक सौ सताईस
प्रान्तों के यहूदियों, अधिपतियों, रज्यपालों
और ऊँचे अधिकारियों को हर एक प्रान्त की
लिपि में और प्रत्येक देश के लोगों की भाषा
में और यहूदियों को भी उनकी लिपि और
उनकी भाषा में लिखी गई। 10 उसने राजा
क्षयर्ष के नाम से चिट्ठियाँ लिखीं और उन
पर राजा की अंगूठी की मोहर लगाई गई।
इसके बाद राजा घुड़साल के तेज दौड़ने वाले
घोड़ों पर सवार हरकारों को खत देकर भेज
दिया गया। 11 राजा ने हर एक नगर में रहने
वाले यहूदियों का यह हक दिखा कि वे एक
होकर खुद अपनी रक्षा करें। यह भी कि यदि
किसी प्रान्त या जाति की फ़ौज उन पर हमला
करे तो उन्हें खतम कर डाले। 12 इस काम
के लिए एक ही दिन तय किया गया। वह
था। यह बारहवें महीने का तेरहवाँ दिन था।
13 इस आदेश की प्रतिलिपियाँ सभी जगह
भेज दी गईं, ताकि यहूदी अपने दुश्मनों से
बदला लें। 14 राजा की बात सुनकर हरकारे
जल्दी से राजा के घोड़ों पर बैठकर चल
दिए। 15 तब मोर्दकै नीले और सफेद रंग के
शाही कपड़े पहन कर सिर पर मुकुट रखकर
महीन बैंजनी मलमल की चादर ओढ़े राजा के
सामने से बाहर निकल गया। 16 यहूदी लोग
खुशी से भर गए और उन्हें इज़्ज़त भी मिली।
17 उन्होंने अच्छा -अच्छा खाना भी खाया।
उस देश में तमाम लोग यहूदी भी बने क्योंकि
उन पर यहूदियों का डर बस गया।

9 बारहवें महीने (अदार के माह) के
तेरहवें दिन, जब राजा का हुकुम माने
जाने वाला था, उसी दिन यहूदी अपने शत्रुओं
के ऊपर भारी पड़ गए। 2 क्षयर्ष राजा के सभी
प्रान्तों में यहूदी अपने-अपने नगरों में इकट्ठे
हुए, ताकि उनके नुकसान करने वालों को
सज़ा दें। यहूदियों के डर के कारण कोई
उनके सामने खड़ा नहीं रह पाया। 3 प्रान्तों
के सभी ऊँचे अधिकारियों, अधिपतियों,
प्रधानों और राजा के कर्मचारियों ने भी
यहूदियों की मदद की क्योंकि उनके अन्दर
मोर्दकै का डर भर गया था। 4 राजभवन में
उसका बड़ा नाम था। सब जगह उसकी
शौहरत थी और वह बढ़ती ही गई। 5 इस
तरह यहूदियों ने अपने दुश्मनों को हराया।
6 राजधानी शूशन में यहूदियों ने दुश्मनों के
दाँत खट्टे कर दिए और पाँच सौ आदमियों
को मौत के घाट उतार दिया। 7 उन्होंने
पर्शन्दाता, दल्पोन, असपाता, 8 पोराता,
अदल्या, अरीदाता, 9 पर्मशत, अरीसै, अरीदै
और वैजाता, 10 अर्थात हम्मदाता के बेटे
यहूदियों के दुश्मन हामान के दस बेटों को
मार दिया, लेकिन उनकी दौलत को यों ही
छोड़ दिया। 11 उस दिन शूशन में यहूदियों
द्वारा मारे गए आदमियों की गिनती राजा
को बतलाई गई। 12 तब राजा ने एस्तेर से
पूछा,"शूशन में यहूदियों ने पाँच सौ आदमियों

और हामान के बेटों को मार डाला है। दूसरे
प्रान्तों में उन्होंने और न जाने क्या-क्या किया
होगा। अब तुम क्या चाहती हो, मैं वह भी
करूँगा।" 13 तब एस्तेर बोली, "यदि आप
मेरी बिनती को पूरा करना चाहते हैं, तो
कल भी यहूदियों को छूट दी जाए कि वे
अपने दुश्मनों को मार सकें। यह भी कि
हामान के बेटे फाँसी के तख्ते पर लटकाएँ
जाएँ।" 14 इसलिए राजा ने यह आदेश दे
दिया। और हामान के बेटों को फाँसी दी भी
गई। 15 अदार के महीने के चौदहवें दिन भी
शूशन के यहूदी इकट्ठे हुए। वहाँ उन्होंने तीन
सौ आदमियों की जान ली। लेकिन लूट के
माल को छुआ तक नहीं। 16 राज्य के दूसरे
प्रान्तों में रहने वाले बाकी यहूदी अपनी जान
को बचाने और सुकून पाने के लिए इकट्ठे
हुए। उन्होंने पचहत्तर हज़ार दुश्मनों की जान
ले ली। उन्होंने सामान को छुआ तक नहीं।
17 ऐसा अदार माह के तेरहवें दिन किया
गया। चौदहवें दिन अच्छा खाना खाया और
खुशी मनाई। 18 शूशन के यहूदी उसी महीने
के तेरहवें दिन और चौदहवें दिन इकट्ठे हुए।
उन्होंने पन्द्रहवें दिन आराम किया, दावत
की और आनन्द मनाया। 19 इसीलिए गाँव में
रहने वाले यहूदी अदार के महीने के चैदाहवें
दिन आनन्द और भोज करके और एक दूसरे
के यहाँ खाना पहुँचा कर त्यौहार मनाते हैं।
20 इन बातों को पूरा-पूरा लिखकर, मोर्दकै
उन सभी यहूदियों का जो राजा क्षयर्ष के
सभी दूर पास के प्रान्तों में रहते थे, चिट्ठियाँ
भेजी। 21 उसका आदेश यह था कि वे हर
साल अदार महीने के चौदहवें और पन्द्रहवें
दिन का त्यौहार मनाएँ। 22 क्योंकि उन दिनों
में यहूदियों ने अपने दुश्मनों से शान्ति पाई
थी। उसी महीने में उनकी मुसीबत और शोक
खुशी में बदल गई थी। इसलिए इन दिनों को
दावत और आनन्द करने तथा एक दूसरे के
यहाँ खाने की चीज़े पहुँचाने और गरीबों को
ईनाम बाँटने का दिन हो। 23 सभी यहूदियों ने
ऐसा करने की ठान ली। 24 सारे यहूदियों के
शत्रु अर्थात अगागी हम्मदाता के बेटे हामान
ने उन्हें बर्बाद करने की योजना बनायी थी।
25 लेकिन जब यह खबर राजा को मालूम हुयी
तब उसने लिखित आज्ञा दी कि यहूदियों का
कोई बाल-बाँका न कर सके और हामान
अपने बेटों के साथ फाँसी के तख्त पर
चढ़ाया जाए। 26 इसलिए ये दिन पूर शब्द
के नाम पर पुरीम कहलाने लगे। 27 यहूदियों
ने अपने, अपनी सन्तान और उन सभी के
लिये जो उनमें मिल गए थे, एक रिवाज़ बना
दिया। इसलिए कि वे बिना भूले इस तारीख
पर इन दोनों दिनों कोहर साल मनाएँ। 28 ये
दिन युगों-युगों तक सभी जगह मनाएँ जाएँ।
पुरीम के ये दिन यहूदियों में हमेशा याद दिए
जाएँ। 29 तब अबीहैल की बेटी एस्तेर रानी
ने मोर्दकै के साथ मिलकर पुरीम के बारे में
पूरे अधिकार के साथ चिट्ठी लिखकर पक्का
कर दिया। 30 उसने क्षयर्ष राजा के.सभी एक
सौ सत्ताईस प्रान्तों के सभी यहूदियों को खत
अर्थात शान्ति और सच्चाई का समाचार.लिख
भेजा। 31 कि जैसे रानी और मोर्दकै द्वारा
ठहराया गया कि उपवास और शोक मनाया
जाए,उनकी सन्तानों (पीढ़ियों) को भी करते
रहना था। यह सब पुरीम के दिनों में किया
जाना था। 32 एस्तेर के आदेश से इन्हें किताब
में भी लिख दिया गया।

10 राजा क्षयर्ष ने अपने देश और समुद्र
तट के देशों पर टॅक्स लगाया।
2 उसकी शक्ति, बुद्धि और पराक्रम के काम
के बारे में मादी और फ़ारस के राजाओं के
इतिहास की किताब में लिखा है। 3 मोर्दकै
मशहूर था और उसका पद राजा के बाद

दूसरा था। उसके परिवार के लोग उससे खुश थे। इसलिए कि वह उनकी भलाई करने का ध्यान रखता था। वह सारी प्रजा का हाल-चाल जाना करता था।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com